सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 180

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 38
दिसम्बर – 2019

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

गुरूबंधु भगिनियों

श्री दत्तात्रेय आद्यगुरु है। प.पू. अत्रि ऋषि व जगत माता श्री अनसूया इनके प्रेम, वात्सल्य व करुणा की भावनाओं से श्री दत्तात्रेय विभूति का जन्म हुआ। अ–त्रि मतलब जो विभूति तीनों तत्वों के परे है। अनसूया मतलब जो विभूति केवल प्रेम, वात्सल्य व करुणा की मूर्ति है, जिस विभूति के पास भय, शंका, असूया आदि बिल्कुल नहीं है। विश्व की निर्मिती के लिए उत्पत्ति, स्थिति, लय इन तीन तत्वों का आविश्कार हुआ। श्री दत्तात्रेय विभूति मतलब इन तीन तत्वों का तथा रज, तम, सत्व इन 3 गुणों का एकरूपतत्व है। श्री दत्तात्रेय विभूति ही नारायण अवस्था है।

जगत की उत्पत्ति से ही दत्तपंथ द्वारा लोक कल्याण का काम जारी है। मानवों का कल्याण हो और जीव का रुपांतर शिव में हो इस उद्देश्य से यह परोपकार का कार्य हो रहा है। दत्तपंथ को अवधूत पंथ भी कहते है। दत्तपंथ का अनुग्रह लेकर उसके अनुसार आचरण करना बहुत कठिन है। दत्तपंथ के यम–नियम बहुत कठिन है। इस पंथ के अनुसार वंदनीय दादाजी ने ढाई साल औदुंबर में सेवा की है। इसके पहले उन्हें आज्ञा हुई थी कि 24 घंटों के अंदर नौकरी छोड़ो। मतलब भिखारी हुए बगैर किसी को भी दत्तपंथ में कुछ नहीं मिलता। दत्तपंथ में प्रथम आपकी कठिन परीक्षा ली जाती है और बाद में आपको दीक्षा दी जाती है। ऐसा यह प्रखर दत्ततत्व वंदनीय दादाजी ने आरती साधना द्वारा भक्तों में धारण कराया है। प्रयाग यानी इलाहाबाद में गंगा, जमुना,

सरस्वती, इन तीन नदियों का त्रिवेणी संगम है। इन तीन नदियों का पानी पवित्र माना जाता है। इसी तरह मानवों के कल्याणार्थ वं. दादाजी ने दत्त, नाथ, सूफी इन तीन पंथों का संगम यानी एकत्रिकरण किया है तभी हम भक्तों को कारणदीक्षा का लाभ हो पाया है। हमें कारण दीक्षा का लाभ होना तथा हमारी जीव अवस्था का स्थित्यंतर होना यह इन तीनों पंथों का हम पर उपकार है। श्री पंतमहाराज के शब्द ब्रह्म द्वारा प्रकट हुई आरतियों द्वारा जीव का शिव में स्थित्यंतर होना सहज संभव है।

दत्ता दया करी दया करी
कृपालू कनवालू हो माऊली करी
साउली दीन बाळावरी।।धृ।।

अर्थ– हे श्री दत्तगुरु मुझपर दया कीजिए। आप कृपालू, कनवालू माता के समान मुझ दीन बालक का पालन करते है।

श्री दत्तगुरु की कृपा प्राप्त होने से साधक/सेवक गुरुशक्ति स्वरुप होता है। ऐसा साधक कृपालू मतलब कृपा करने वाला, दयालु तथा कनवालू मतलब दूसरों के दुख को अपना समझने वाला होता है। दुखी लोगों के लिए वह माता, पिता, भाई के समान आश्रय, सहारा देने वाला होता है। ऐसा साधक उसके जीवन में आने वाले हरेक दुख का सामना करके धर्म–जाति का भेद न रखकर प्रत्येक सामान्य जीव को प्रेम, सहारा, आनंद, समाधान प्रदान करता है और इस तरह से उसे प्राप्त हुई गुरुकृपा से वह अपने जीवन का सार्थक करता रहता है।

प्रेमपान्हा स्तनीं वाहूं दे निशिदिनीं
अमृत नयनीं पाही सदा
सदाशिवा भव निवारी।।1।।

अर्थ – इस भव सागर में सामान्य जीवन जन्म–मृत्यु के चक्र में फंसे हुए होते है। उन्हें यह साधक हमेशा प्रेमपूर्वक, वत्सलता से देखता है। जिस तरह माता को अपने शिशु की भूख, प्यास, सुख–दुख, जरुरतें इनका एहसास होता है उसी तरह इस साधक को भी दुखी लोगों के दुख का एहसास होता है और वह दुखी लोगों को भवसागर पार कराने में कार्यरत होता है।

क्षुधा तृशा शीण लागों ने दी क्षण
अंतरखूण दावुनीया
यादभक्त तूं जललहरी।।2।।

अर्थ – सामान्य लोगों की क्षुधा–तृशा मतलब भूख–प्यास अखंड (हमेशा) होती है इसलिए उनके मन को एक क्षण की भी शांति प्राप्त नहीं होती। ऐसे सामान्य भक्त जब थककर श्रीगुरु की शरण में आते है तब श्री गुरु उन्हें अपनी अंतःप्रेरणा से मानवीय जन्मकारण की पहचान कराते है। जिस तरह पानी की लहरें एक के बादएक इस तरह से अखंड रुप से

निर्माण होती रहती है उसी तरह साधक के अंतर्मन में श्री गुरु का स्मरण (याद) अखंड रुप से प्रवाहित होता रहता है।

आशा तृश्णा धांव दवडी चिंतामाव
देईं निजठाव खेळाया
लोळाया तुझें महाद्वारीं।।3।।

अर्थ – दैनंदिन जीवन में साधक को भी औरों की तरह आशा–निराशा, इच्छा–अपेक्षा, संयम, क्रोध आदि भावनाओं का सामना करना पड़ता है परन्तु उसके मन में श्री गुरु के प्रति अटूट विश्वास आदर, प्रेम होता है और यही उसके जीवन का सार होता है। इस तरह श्री गुरु के चरण यही उसका महाद्वार बनता है और यह साधक निश्चित रुप से वही निवास करता है।

नको परतें सारुं लाडकें लेंकरूं
प्रेमळ सद्गुरु दत्तमातें
मातें पदरींघेईं नरहरी।।4।।

अर्थ – सद्गुरुरुप हुआ यह साधक आर्तता से कहता है, "हे श्री गुरु, मैं आपका लाडला बालक हूँ, मुझे अपने से दूर मत कीजिए।

जिस तरह माता अपने शिशु को अपने पल्लू के नीचे खुद के बहुत निकट रखती है उसी तरह हे प्रेमल सद्गुरु दत्तमाते आप मुझे अपने निकट रखिए।

जिस साधक को गुरुप्रेम की आस होती है उसे गुरु माउली अपने कृपाप्रसाद से अखंड अभयदान देते है। जिस तरह बालक माता के पास आते ही माता उसे प्रेम से आलिंगन देती है ऐसी ही अवस्था गुरु–शिष्य (साधक) की होती है।

ज्ञान संवेदना वर्ग

जीवन में उत्पन्न हुई समस्याओं के निवारणार्थ आपने आज तक समिति की कार्यपद्धति का लाभ लिया है लेकिन समिति की कार्यपद्धति का उद्देश्य भविष्य बताना नहीं है बल्कि आप रूढ़ी–परंपराओं के अनुसार जो देवी–देवताओं की पूजा–अर्चना करते है उसे नियमित तथा निश्चित दिशा देना है। इसका एहसास आपको हुआ है और श्री गुरु द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त करके आप जीवन में शांति तथा समाधान निर्माण कर पाए है।

आप समस्याओं से परेशान होकर यहाँ गुरुमार्ग में आए थे। उन समस्याओं को सुलझाना यही आपका उद्देश्य था लेकिन गुरुकृपाशीर्वाद प्राप्त होने के बाद आप भक्तजन अपने जीवन के प्रति सज्ञान हुए है तथा भविष्य में जीवन में आने वाली समस्याओं का मुकाबला करने का आत्मविश्वास तथा मानसिक बल आपको प्राप्त हुआ है। अब आपका कर्त्तव्य है कि यही प्रबंध

आपने आने वाली पीढ़ी के लिए करना है मतलब क्या करना है? तो बाल्य अवस्था से ही बच्चों के मन पर उचित संस्कार करने है। आपको लगता है कि आपने बच्चों को कपड़े दिए, खाना दिया तथा पढ़ाई का इंतजाम किया मतलब आपका कर्त्तव्य पूर्ण हुआ परन्तु ऐसा नहीं है। यदि बच्चों पर बाल्य अवस्था से ही उचित संस्कार नहीं हुए तो युवा अवस्था में उनका मनोबल कमजोर ही रहेगा। ऐहिक जगत में वे उपभोग की ओर आकर्शित होते रहेंगे और अंत में निराशावाद (depression) का शिकार होंगे। ऐसी परिस्थिति में उनका संरक्षण करना आप भक्तभाविकों का कर्त्तव्य है।

पश्चिमी देशों में युवा पीढ़ी एक कठिन समस्या बन गई है। भावनाओं के अभाव में आज वहाँ की युवा पीढ़ी यंत्र के समान जीवन जी रही है। आज वहाँ का युवा वर्ग माता–पिता, शिक्षक तथा बड़े–बुजुर्गों को मानने से इन्कार करता है वह ईश्वर को जो सामान्य आँखों से नहीं दिखते उन्हें कैसे मानेंगे?यह परिस्थिति हमारे यहाँ भी निर्माण होगी। जहाँ माता–पिता पर ही संस्कार नहीं है वे बच्चों पर क्या संस्कार करेंगे?इसलिए अपने कार्यकेंद्रों पर प्रत्येक महीने में एक रविवार को 'ज्ञान संवेदना वर्ग' लिया जाएगा। इस में बच्चों को प्रार्थना, स्तोत्र, ॐकार साधना सिखाई जाएगी तथा जीवनावश्यक बोध दिया जाएगा। कठिन समस्याओं से परेशान होकर आपको मजबूरी से गुरुमार्ग में आना पड़ा। ज्ञान संवेदना वर्ग में दिए जाने वाले संस्कारों के कारण आपके बच्चों के जीवन में इस तरह की मजबूरी की परिस्थिति नहीं आएगी। जीवन में आने वाली कठिन परिस्थिति का मुकाबला करने के लिए उनके मनोबल सामर्थ्यवान होंगे। इसी साल बच्चों के लिए एक सम्मेलन भी लिया जाएगा। इसमें बच्चों को कसरत और स्वावलंबन सिखाया जाएगा। उससे पहले बच्चों को 'ज्ञान संवेदना वर्ग' में भेजने का कर्त्तव्य पूर्ण करें यह विनती है।

।। शुभं भवतु।।

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible